+ नवभारत
छिंदवाड़ा, रविवार, 21 जून 2026

आधुनिक समाज में ज्योतिष की प्रासंगिकता

ज्योतिषाचार्य
तेजस्कर पाण्डेय

मानव सभ्यता के विकास के इतिहास पर दृष्टि डालें तो स्पष्ट होता है कि मनुष्य ने सदैव अपने अस्तित्व, भविष्य और ब्रह्माण्ड के रहस्यों को समझने का प्रयास किया है. आकाश में चमकते ग्रहों, तारों और नक्षत्रों को देखकर उसके मन में अनेक प्रश्न उत्पन्न हुए—क्या इनका हमारे जीवन से कोई संबंध है? क्या प्रकृति और मानव जीवन के बीच कोई अदृश्य सामंजस्य विद्यमान है? इन्हीं प्रश्नों की खोज ने ज्योतिष जैसी प्राचीन ज्ञान-परंपरा को जन्म दिया. हजारों वर्षों के उतार-चढ़ाव, वैज्ञानिक क्रांतियों और सामाजिक परिवर्तनों के बावजूद ज्योतिष द्वआज भी विश्वभर में करोड़ों लोगों के जीवन का हिस्सा बना हुआ है. यह तथ्य अपने आप में महत्वपूर्ण है कि आधुनिक विज्ञान और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में भी ज्योतिष के प्रति लोगों का आकर्षण समाप्त नहीं हुआ, बल्कि कई रूपों में और अधिक बढ़ा है.

सामान्यत: ज्योतिष को केवल भविष्य बताने वाली विद्या के रूप में देखा जाता है, जबकि इसका स्वरूप इससे कहीं अधिक व्यापक है. वास्तव में ज्योतिष एक सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक और सामाजिक विश्वास-प्रणाली के रूप में कार्य करता है. यह व्यक्ति को अपने जीवन की घटनाओं, संबंधों, संघर्षों और उपलब्धियों को समझने का एक प्रतीकात्मक ढाँचा प्रदान करता है. जब व्यक्ति जीवन की अनिश्चितताओं, असफलताओं या कठिन निर्णयों के सामने खड़ा होता है, तब वह किसी ऐसे माध्यम की खोज करता है जो उसे आशा, दिशा और अर्थ प्रदान कर सके. ज्योतिष इसी मानवीय आवश्यकता की पूर्ति करता है.

विश्व की लगभग सभी प्राचीन सभ्यताओं में ज्योतिष का विकास हुआ. मेसोपोटामिया में ग्रहों की गति के आधार पर राज्य और कृषि संबंधी निर्णय लिए जाते थे. मिस्र में ज्योतिष धार्मिक अनुष्ठानों और मंदिर निर्माण से जुड़ा हुआ था. यूनान में इसे गणितीय और दार्शनिक आधार मिला. चीन में ज्योतिष को ब्रह्माण्डीय संतुलन और सामाजिक व्यवस्था का साधन माना गया. भारत में यह वेदाङ्ग के रूप में विकसित हुआ और धर्म, दर्शन, खगोलशास्त्र तथा सामाजिक जीवन से गहराई से जुड़ गया. यह विविधता इस बात का प्रमाण है कि ज्योतिष केवल किसी एक संस्कृति की देन नहीं, बल्कि मानव सभ्यता की सामूहिक बौद्धिक विरासत का एक महत्वपूर्ण अंग है.

भारतीय ज्योतिष की विशिष्टता इसकी समग्र दृष्टि में निहित है. यहाँ ज्योतिष केवल ग्रहों की स्थिति का अध्ययन नहीं है, बल्कि कर्म, धर्म, पुरुषार्थ और मोक्ष जैसे गहन दार्शनिक सिद्धांतों से भी जुड़ा हुआ है. भारतीय चिंतन में ग्रहों को मनुष्य के भाग्य के कठोर नियंता के रूप में नहीं देखा गया, बल्कि उन्हें जीवन की संभावनाओं, प्रवृत्तियों और कर्मफल के संकेतक के रूप में समझा गया है. इस दृष्टिकोण में व्यक्ति का पुरुषार्थ सर्वोपरि माना गया है. ज्योतिष मार्गदर्शन दे सकता है, परंतु अंतिम निर्णय और कर्म मनुष्य के हाथ में ही रहते हैं.

भारतीय समाज में आज भी ज्योतिष की उपस्थिति अत्यंत व्यापक है. विवाह से पूर्व कुंडली मिलान, गृह प्रवेश के लिए मुहूर्त चयन, नामकरण संस्कार, व्यापार आरंभ, चुनावी रणनीति, धार्मिक अनुष्ठान तथा विभिन्न सामाजिक अवसरों पर शुभ समय का विचार किया जाता है. आलोचक इसे परंपरा कह सकते हैं, परंतु समाजशास्त्रीय दृष्टि से यह सामाजिक व्यवस्था और सांस्कृतिक निरंतरता का भी एक माध्यम है. यह लोगों को साझा विश्वासों और सांस्कृतिक मूल्यों से जोड़ता है, जिससे सामाजिक एकता और पहचान का निर्माण होता है.

आधुनिक मनोविज्ञान के संदर्भ में भी ज्योतिष को नए दृष्टिकोण से देखा जा रहा है. कई विद्वानों का मानना है कि ज्योतिषीय प्रतीक मनुष्य के अवचेतन मन, व्यक्तित्व और जीवन-अनुभवों को समझने में सहायक हो सकते हैं. जब कोई व्यक्ति अपनी जन्मकुंडली का अध्ययन करता है, तो वह केवल ग्रहों की स्थिति नहीं देखता, बल्कि स्वयं को समझने का प्रयास करता है. वह अपने गुणों, सीमाओं, आशंकाओं और संभावनाओं पर विचार करता है. इस प्रकार ज्योतिष आत्मनिरीक्षण और आत्मबोध का माध्यम बन सकता है. कई लोग इसे परामर्श और जीवन-निर्देशन के साधन के रूप में भी उपयोग करते हैं.

आधुनिक जीवन में तनाव, अकेलापन, मानसिक दबाव और भविष्य की अनिश्चितता लगातार बढ़ रही है. ऐसी परिस्थितियों में लोग केवल आर्थिक या भौतिक समाधान नहीं खोजते, बल्कि मानसिक और भावनात्मक संतुलन की भी तलाश करते हैं. ज्योतिष, चाहे कोई इसे पूर्णत: सत्य माने या प्रतीकात्मक भाषा के रूप में देखे, लोगों को आशा और आत्मविश्वास प्रदान करने का कार्य करता है. अनेक लोगों के लिए यह जीवन की कठिन परिस्थितियों को समझने और उनसे उबरने की मनोवैज्ञानिक शक्ति का स्रोत बनता है.

ज्योतिष का एक महत्वपूर्ण पक्ष इसकी बहुआयामी प्रकृति है. इसके अंतर्गत जन्मकुंडली ज्योतिष, प्रश्न ज्योतिष, मुहूर्त ज्योतिष, चिकित्सा ज्योतिष, आध्यात्मिक ज्योतिष, मनोवैज्ञानिक ज्योतिष, राजनीतिक अथवा वैश्विक ज्योतिष तथा कर्म सिद्धांत आधारित ज्योतिष जैसी अनेक शाखाएँ विकसित हुई हैं. प्रत्येक शाखा मानव जीवन के किसी विशेष आयाम को समझने का प्रयास करती है. चिकित्सा ज्योतिष स्वास्थ्य और जीवनशैली पर विचार करती है, जबकि मनोवैज्ञानिक ज्योतिष व्यक्तित्व और व्यवहार को समझने का प्रयास करती है. आध्यात्मिक ज्योतिष जीवन के गहरे उद्देश्य और आत्मिक विकास पर बल देती है.

ज्योतिष का वास्तविक महत्व भविष्य बताने में नहीं, बल्कि मनुष्य को स्वयं से जोड़ने में है. यह हमें स्मरण कराता है कि हम केवल पृथ्वी पर रहने वाले जैविक प्राणी नहीं हैं, बल्कि एक विराट ब्रह्माण्डीय व्यवस्था का हिस्सा हैं. चाहे कोई इसे विज्ञान माने, दर्शन माने, संस्कृति माने या विश्वास-प्रणाली—ज्योतिष मानव की उस शाश्वत जिज्ञासा का प्रतीक है जो उसे अपने अस्तित्व के गहरे अर्थ की खोज के लिए प्रेरित करती है. इसी कारण यह हजारों वर्षों से जीवित है और संभवत: आने वाले समय में भी मानव चिंतन का एक महत्वपूर्ण अंग बना रहेगा.

गायत्री जयंती पर जरूर करें ये कार्य

सनातन धर्म में गायत्री जयंती का विशेष धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व माना जाता है. यह पावन पर्व मां गायत्री के प्राकट्य दिवस के रूप में मनाया जाता है, जिन्हें वेदमाता, देवमाता और विश्वमाता के नाम से भी जाना जाता है. धार्मिक मान्यताओं के अनुसार मां गायत्री की उपासना करने से व्यक्ति को ज्ञान, बुद्धि, विवेक और आध्यात्मिक शक्ति की प्राप्ति होती है. वर्ष 2026 में गायत्री जयंती 25 जून, गुरुवार को मनाई जाएगी. इस शुभ अवसर पर किए गए धार्मिक कार्यों से जीवन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है और सुख-समृद्धि के मार्ग खुलते हैं.

गायत्री जयंती के दिन गायत्री मंत्र का जाप विशेष फलदायी माना जाता है. मान्यता है कि श्रद्धा

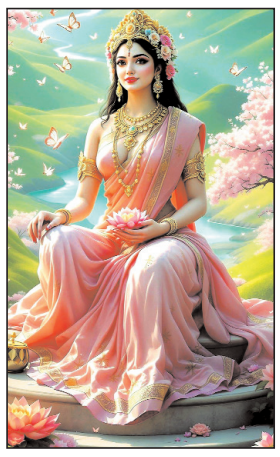

और एकाग्र मन से 108 या 1008 बार गायत्री मंत्र का जाप करने से मानसिक शांति प्राप्त होती है, नकारात्मक विचार दूर होते हैं और बुद्धि का विकास होता है. यह मंत्र आध्यात्मिक उन्नति का प्रमुख साधन माना गया है.

गायत्री जयंती पर दान का भी विशेष महत्व बताया गया है. मां गायत्री को ज्ञान की अधिष्ठात्री देवी माना जाता है, इसलिए जरूरतमंद विद्यार्थियों को पुस्तकें, कॉपियां या अन्य शैक्षणिक सामग्री दान करना शुभ माना जाता है. इसके अलावा अन्न, वस्त्र और अन्य आवश्यक वस्तुओं का दान करने से पुण्य फल की प्राप्ति होती है. इसके अलावा अन्न, वस्त्र और अन्य आवश्यक वस्तुओं का दान करने से पुण्य फल की प्राप्ति होती है.

इस दिन गायत्री यज्ञ या हवन का आयोजन भी अत्यंत शुभ माना जाता है. हवन में देसी घी, जौ, तिल और गुड़ जैसी पवित्र सामग्रियों का उपयोग किया जाता है. प्रत्येक आहुति के साथ गायत्री मंत्र का उच्चारण करने से वातावरण शुद्ध होता है और घर-परिवार में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है. धार्मिक दृष्टि से यह कार्य पुण्यदायी माना गया है.

व्रत और सात्त्विक भोजन का पालन भी इस दिन की प्रमुख परंपराओं में शामिल है. श्रद्धालु अपनी क्षमता के अनुसार व्रत रखते हैं या फलाहार करते हैं. यदि व्रत संभव न हो तो सात्त्विक भोजन ग्रहण कर मन और शरीर की शुद्धि का प्रयास किया जाता है. इससे संयम, अनुशासन और भक्ति भाव में वृद्धि होती है.

इसके साथ ही गायत्री चालीसा और आरती का पाठ करना भी अत्यंत शुभ माना जाता है. मान्यता है कि इससे परिवार में सुख, शांति, प्रेम और सद्भाव बना रहता है.

महेश नवमी पर बरसेगी महादेव की कृपा

महेश नवमी 2026 का पावन पर्व इस वर्ष 23 जून, मंगलवार को मनाया जाएगा. यह दिन भगवान शिव (महेश) और माता पार्वती की आराधना के लिए अत्यंत शुभ माना जाता है. हिंदू पंचांग के अनुसार ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को मनाया जाने वाला यह पर्व विशेष रूप से माहेश्वरी समाज के लिए महत्वपूर्ण है.

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार इसी दिन भगवान शिव और माता पार्वती ने माहेश्वरी समाज के पूर्वजों को श्राप से मुक्ति प्रदान कर उन्हें नया जीवन और नई पहचान दी थी. यही कारण है कि इस दिन को माहेश्वरी वंशोत्पत्ति दिवस और महेश जयंती के रूप में भी श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया जाता है.

पंचांग के अनुसार नवमी तिथि का आरंभ 22 जून 2026 को दोपहर 3:40 बजे से होगा और इसका समापन 23 जून 2026 को शाम 4:40 बजे होगा. हिंदू धर्म में उदयातिथि को विशेष महत्व दिया जाता है, इसलिए महेश नवमी का व्रत और पूजा-अर्चना 23 जून को करना शास्त्रसम्मत माना गया है. इस दिन श्रद्धालु भगवान शिव और माता पार्वती की विधिवत पूजा कर सुख-समृद्धि, स्वास्थ्य और आध्यात्मिक उन्नति की कामना करते हैं. महेश नवमी के अवसर पर भक्त प्रात:काल स्नान कर स्वच्छ वस्त्र धारण करते हैं और व्रत का संकल्प लेते हैं. इसके बाद घर के मंदिर या निकट स्थित शिवालय में जाकर शिवलिंग का गंगाजल, दूध, दही, घी और शहद से अभिषेक किया जाता है.

धार्मिक ग्रंथों और मान्यताओं के अनुसार महेश नवमी का व्रत रखने और श्रद्धापूर्वक पूजा करने से व्यक्ति के जीवन से नकारात्मकता, अज्ञानता और पापों का नाश होता है. साथ ही परिवार में सुख, शांति और समृद्धि का वास होता है. यह पर्व केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक नहीं, बल्कि समाज में एकता, सेवा और सांस्कृतिक परंपराओं को सहेजने का भी अवसर प्रदान करता है.

घर में मनी प्लांट रखना माना जाता है शुभ

वास्तु शास्त्र और फेंगशुई में मनी प्लांट को अत्यंत शुभ और सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करने वाला पौधा माना जाता है. मान्यता है कि घर में मनी प्लांट लगाने से सुख-समृद्धि, आर्थिक उन्नति और खुशहाली का आगमन होता है. यही कारण है कि आज के समय में यह पौधा केवल सजावटी पौधे के रूप में ही नहीं, बल्कि शुभता और सौभाग्य के प्रतीक के रूप में भी लोगों के बीच काफी लोकप्रिय है.

मनी प्लांट का संबंध धन, समृद्धि और सकारात्मक ऊर्जा से माना जाता है. कहा जाता है कि जिस घर में यह पौधा हरा-भरा और स्वस्थ रहता है, वहां आर्थिक स्थिरता और उन्नति के अवसर बढ़ते हैं. इसके अलावा यह

पौधा घर के वातावरण को भी ताजगी और हरियाली प्रदान करता है, जिससे मानसिक शांति और सकारात्मकता का अनुभव होता है. मनी प्लांट को घर में सही दिशा में रखना भी महत्वपूर्ण माना गया है. वास्तु शास्त्र के अनुसार इसे दक्षिण-पूर्व दिशा में रखना सबसे शुभ माना जाता है. यह दिशा अग्नि तत्व और धन के कारक ग्रह शुक्र से संबंधित मानी जाती है. इस दिशा में रखा गया मनी प्लांट सकारात्मक ऊर्जा को आकर्षित करने और आर्थिक प्रगति को बढ़ावा देने वाला माना जाता है. वहीं उत्तर-पूर्व दिशा में मनी प्लांट रखने से बचने की सलाह दी जाती है. धार्मिक और पारंपरिक मान्यताओं के अनुसार मनी प्लांट की बेल जितनी तेजी से बढ़ती है, उसे उतना ही शुभ संकेत माना जाता है.

निर्जला एकादशी पर भद्रा का साया

2026 में निर्जला एकादशी का व्रत 25 जून, गुरुवार को रखा जाएगा. हालांकि इस बार एकादशी पर भद्रा काल का प्रभाव भी रहेगा, लेकिन इसके साथ कई शुभ योगों का दुर्लभ संयोग बनने से इस पर्व का महत्व और अधिक बढ़ गया है.

पंचांग के अनुसार ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि 24 जून 2026 को रात्रि 8 बजकर 9 मिनट से प्रारंभ होगी और 25 जून 2026 को रात्रि 9 बजकर 14 मिनट तक रहेगी. उदया तिथि के आधार पर निर्जला एकादशी का व्रत 25 जून को रखा जाएगा.

ज्योतिषीय गणनाओं के अनुसार इस बार निर्जला एकादशी पर कई शुभ संयोग बन रहे हैं. एकादशी के दिन शिव योग, रवि योग और सिद्ध योग का निर्माण होगा, जिन्हें धार्मिक कार्यों, मंत्र जाप और भगवान विष्णु की आराधना के लिए अत्यंत शुभ माना जाता है. इसके अलावा गुरुवार का दिन होने से भगवान विष्णु और देवगुरु बृहस्पति की कृपा प्राप्त करने का भी विशेष अवसर रहेगा.

निर्जला एकादशी का व्रत भगवान विष्णु को समर्पित होता है. इस दिन श्रद्धालु प्रात:काल स्नान कर व्रत का संकल्प लेते हैं और भगवान विष्णु की विधिवत पूजा करते हैं. पीले वस्त्र, तुलसी दल, पीले पुष्प और पंचामृत अर्पित कर विष्णु सहस्रनाम तथा विष्णु मंत्रों का जाप किया जाता है. धार्मिक मान्यता है कि इस दिन श्रद्धापूर्वक उपवास करने और दान-पुण्य करने से पापों का क्षय होता है तथा सुख, समृद्धि और मोक्ष की प्राप्ति होती है. धार्मिक दृष्टि से भद्रा काल को शुभ कार्यों के लिए उपयुक्त नहीं माना जाता, लेकिन व्रत, जप, तप, पूजा-पाठ और भगवान की आराधना पर इसका कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ता. ऐसे में श्रद्धालु निर्जला एकादशी के दिन नियमपूर्वक व्रत रखकर भगवान विष्णु की पूजा कर सकते हैं और शुभ योगों का लाभ प्राप्त कर सकते हैं.

आर्थिक तंगी दूर करने के उपाय

हर व्यक्ति अपने जीवन में आर्थिक सुख-समृद्धि और स्थिरता की कामना करता है, लेकिन कई बार अथक मेहनत के बावजूद आर्थिक परेशानियां पीछा नहीं छोड़तीं. आय से अधिक खर्च, कर्ज का बढ़ना, धन का टिककर न रहना या बार-बार वित्तीय नुकसान जैसी समस्याएं व्यक्ति को मानसिक तनाव में डाल सकती हैं. धार्मिक मान्यताओं और ज्योतिष शास्त्र में कुछ ऐसे उपाय बताए गए हैं, जिन्हें श्रद्धा और विश्वास के साथ करने से आर्थिक तंगी को दूर करने तथा धन संबंधी बाधाओं को कम करने में सहायता मिल सकती है.

धार्मिक मान्यता के अनुसार मां लक्ष्मी धन, वैभव और समृद्धि की अधिष्ठात्री देवी हैं. इसलिए नियमित रूप से मां लक्ष्मी की पूजा करना शुभ माना जाता है. विशेष रूप से शुक्रवार के दिन मां लक्ष्मी के समक्ष घी का दीपक जलाकर श्रीसूक्त या लक्ष्मी मंत्र का पाठ करने से सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है और आर्थिक उन्नति के मार्ग खुलने की मान्यता है.

वास्तु शास्त्र में घर की स्वच्छता को भी आर्थिक स्थिति से जोड़कर देखा जाता है. कहा जाता है कि जिस घर में साफ-सफाई और व्यवस्थित वातावरण रहता है, वहां सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह बना रहता है. मुख्य द्वार को स्वच्छ रखना और प्रतिदिन दीपक जलाना शुभ माना जाता है. साथ ही टूटे-फूटे सामान, बेकार वस्तुओं और कबाड़ को घर से हटाने की सलाह दी जाती है. ज्योतिषीय मान्यताओं के अनुसार गुरुवार और शुक्रवार को दान-पुण्य करना भी लाभकारी माना जाता है. जरूरतमंद लोगों को अन्न, वस्त्र या अन्य उपयोगी वस्तुओं का दान करने से पुण्य फल प्राप्त होता है और जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आने की मान्यता है.

हालांकि धार्मिक और ज्योतिषीय उपाय आस्था का विषय हैं, लेकिन आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाने के लिए मेहनत, सही वित्तीय योजना, बचत की आदत और सोच-समझकर किए गए निवेश भी उतने ही आवश्यक हैं. जब व्यक्ति परिश्रम, अनुशासन और सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ता है, तो सफलता और आर्थिक स्थिरता प्राप्त करने की संभावनाएं बढ़ जाती हैं. इसलिए धार्मिक उपायों के साथ-साथ व्यावहारिक प्रयासों को भी अपनाना आवश्यक माना जाता है.

साप्ताहिक राशिफल

दिनांक- 21 से 27 जून 2026 तक

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास,
कोतवाली बाजार,
जबलपुर मो.नं.
098266-21998

साप्ताहिक ग्रहस्थिति- इस सप्ताह सूर्य मिथुन राशि में, मंगल वृषभ राशि में, बुध मिथुन राशि में ता. 22 को 2/16 दिन से कर्क राशि में, गुरू कर्क राशि में, शुक्र कर्क राशि में, शनि मीन राशि में, राहु कुम्भ राशि में, केतु सिंह राशि में और चन्द्रमा सिंह कन्या तुला और वृश्चिक राशि में संचरण करेगा.

ग्रहयोगों का प्रभाव :- ता. 22 को कर्क राशि में त्रिग्रह के प्रभाव से धान, गुड, दूध, दही, तेल, मूंगफली, सरसों, सोना में तेजी आती है, किन्तु यह तेजी अस्थिर रहेगी. चांदी में घट-बढ़ रहेगी. रूई में मंदी का रूख अनाजों में स्थिरता आएगी. जून में शेयर बाजार में उतार-चढाव बना रहेगा.

पर्व-व्रत-त्यौहार :

सोमवार	22 जून को	धूमावती जयंती,
मंगलवार	23 जून को	महेश नवमीं, महेश जयंती,
बुधवार	24 जून को	गंगा दशहरा, गायत्री प्रकटोत्सव,
गुरूवार	25 जून को	निर्जला एकादशी व्रत, भीमसेनी एकादशी व्रत,
शनिवार	27 जून को	द. वटसावित्री व्रतारम्भ, प्रदोष व्रत, बड़ा महादेव पूजन,

मेष

सामाजिक क्षेत्र में रूचि रहेगी, व्यक्तित्व प्रभावशाली रहेगा, व्यवसायिक मामलों में संबंध बढ़ेंगे, आप अपने सुझावों को सहयोगियों के सामने रख सकते हैं, जिससे लाभ होगा, कामकाज के सिलसिले में यात्रा संभाव्य है, धार्मिक कार्यो की ओर रूचि एवं रूझान रहेगी, भूमि भवन मकानादि के संबंध में महत्वपूर्ण निर्णय हो सकता है.

वृषभ

सप्ताह के पूर्वार्ध में शारीरिक शिथिलता का अनुभव हो सकता है, उदर विकार से कष्ट होगा, अधिकारियों से अपने कार्य के संबंध में उचित आश्वासन मिलने के योग हैं, चतुराई से अपना कार्य निकालना आसान रहेगा, घर में अतिथि आगमन से दायित्व बढ़ेगा, व्यर्थ के विवादों से बचना चाहिये, धैर्य रखकर कार्य करें, बड़े लोगों का सहयोग लाभदायक रहेगा.

मिथुन

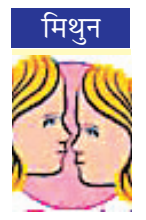

सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, आगे बढ़ने के अवसर आयेंगे, कामकाज पर विस्तार होगा, गफ्लतबाजी के कारण मित्रों से विरोध हो सकता है, कार्य सुचारू रूप से चलेगा, साझेदारी के कार्यों में पूरी तरह जांच पड़ताल कर लें, यदि आप रक्तचाप या अन्य गर्म बीमारियों से पीड़ित हैं, तो इस सप्ताह के मध्य में विशेष सावधानी रखें, सप्ताहान्त में विशिष्ट सफ्लता का योग है.

कर्क

उलझे हुये कार्यो में सफ्लता के योग हैं, धन के लेनदेन में सावधानी रखें, सप्ताह के मध्य में वाणी संयम से काम लें, अन्यथा आपसी लोगों से विवाद या मनमुटाव हो सकता है, इस बात का विशेष ध्यान रखें, बातचीत में मधुरता बनाये रखें, यात्रा में लाभ की अपेक्षा परेशानियां अधिक होंगी, योजना पूरी करने के लिये किसी का सहयोग उल्लेखनीय रहेगा.

सिंह

नवीन योजनाओं पर विचार विमर्श होगा, कार्यक्षेत्र में अधिनस्थों का रवैया आपके प्रति असहयोगात्मक हो सकता है, अच्छा होगा कि आप उनसे बातचीत की पहल करें, व्यवसायिक क्षेत्र में चतुराई से कार्य में लाभ मिलेगा, संतान के कार्यो में खर्च होगा, प्रसन्नता का अनुभव कम ही कर पायेंगे, गुरूवार के बाद बनने वाला संपर्क आपको दूरगामी शुभ परिणाम देगा.

कन्या

कामकाज की अधिकता रह सकती है, आय के साधन बढ़ेंगे, अहं से बचना चाहिये, रूका हुआ धन प्राप्त होने की आशा है, अधिकारी वर्ग आपकी छबि बिगाड़ने का असफ्ल प्रयास करेंगे, यात्राओं की अधिकता रहेगी, दूर गये मित्र के संबंध में शुभ सूचना मिलेगी. बिना सोचे समझे, किसी भी कार्य के संबंध में निर्णय न करें, नौकरी में नई योजना की संभावना है.

तुला

यह सप्ताह व्यवसाय की दृष्टि से सावधानी का रहेगा, मित्र वर्ग से परेशानी हो सकती है, मानसिक सुख शांति में कमी का योग है, परन्तु किसी नये व्यक्ति का सहयोग आपकी परेशानी कम करने में सहायक रहेगा, अधिकारी वर्ग का सहयोग कम रहेगा, स्वत: के स्वास्थ्य के संबंध में सावधानी रखें, कोई पुरानी वस्तु मिलने से मन में खुशी होगी.

वृश्चिक

आप अपनी कार्यक्षमता से अपने वरिष्ठ लोगों को प्रभावित करेंगे, सहयोगियों का पूर्ण सहयोग मिलेगा, सप्ताह की शुरूआत में आप यात्रा का विचार कर सकते हैं, वित्तीय मामलों में पुरानी समस्याओं को दूर करने में सहयोगी रहेंगे, नवीन योजनाओं पर विचार विमर्श होगा, आर्थिक एवं व्यवसायिक क्षेत्र में सफ्लता के संकेत हैं, कानूनी विवादों में विशेष खर्च और सफ्लता के योग हैं.

धनु

समय के स्वरूप को देखकर कार्य करना लाभकारी होगा, भूमि भवन, क्रय-विक्रय से लाभ की संभावना है, मशीनरी की टूटफूट पर खर्च हो सकता है, राजकीय क्षेत्र में सफ्लता मिलेगी, व्यापारिक साझेदारी के कार्यो में सहयोग रहेगा, नये संपर्क लाभकारी रहेंगे, हिम्मत दूरदर्शिता एवं सहनशीलता से आपको अपनी सारी समस्याओं को दूर करने में मदद मिलेगी.

मकर

शुभ सूचना से मन प्रसन्न हो सकता है, साझेदारी के कार्यो में नया कार्य शुरू होने का योग है, धन संबंधी मामलों में खुद निर्णय लें, बातचीत में सावधानी रखें, नये कारोबार को ऊँचाईयों पर पहुंचाने में मदद मिलेगी, व्यापारिक मित्रों के साथ नये समझौते हो सकते हैं, सप्ताह के मध्य जल्दबाजी में लिये गये निर्णय कुछ समय बाद बदलने की नौबत आ सकती है, पुराना कार्य बनेगा.

कुम्भ

मानसिक परेशानी व निराशा का अनुभव होगा, दुविधा की स्थिति से बचना चाहिये, खरीदी बिक्री के कार्य से लाभ होगा, कारोबार के सिलसिले में दूर जाने की संभावना है, प्रतियोगी परीक्षाओं में सफ्लता मिलेगी, प्रियजनों से निकटता बढ़ने के अवसर आयेंगे, राजकीय कार्यो में सफ्लता के योग हैं, पूज्य व्यक्ति की सलाह उपयोगी रहेगी.

मीन

आपको मान सम्मान प्राप्त होगा, वित्तीय मामलों में सोच समझकर फैसला करें, इससे अच्छे लाभ की संभावना है, स्वास्थ्य में सुधार होगा, आत्म विश्वास बना रहेगा, शादी विवाह की रूपरेखा पर विचार होगा, शत्रुओं से समझौता करने में लाभ की संभावना है, संतान के संबंध में थोड़ी चिन्ता हो सकती है, जिसका निराकरण शीघ्र ही होगा.